कोसी क्षेत्र के मंदिरों का इतिहास एक सर्वेक्षण

डॉ0 दीनबन्धु प्रसाद

महाकवि कालीदास के अनुसार कोशी के तट पर साक्षात् शंकर बसते है। यह क्षेत्र शिव का समाधि स्थल रहा है तथा देवताओं का शिव से भेंट करने का निर्दिष्ट स्थल भी। वाल्मीकि के रामायण के अनुसार कौशिकी विश्वामित्र की ज्येष्ठ बहन थी। इसी के तट पर विश्वामित्र ने घोर तप किया था और गायत्री मंत्र को सिद्ध किया था।

सीमित अन्वेषण एवं उत्खनन के कारण कोशी की प्राचीनता, वहाँ की प्रार्दुभाव पर पर्याप्त प्रकाश नहीं पड़ पाया है। साथ ही इस क्षेत्र के प्रारम्भिक इतिहास को उद्घाटित करने वाले साहित्यिक साक्ष्य ग्रन्थों में यदा–कदा कोशी क्षेत्र का उद्धरण प्राप्त होते हैं। बिहार में यदि गंगा को विभाजन रेखा माने तो सांस्कृतिक दृष्टि से पूरा बिहार दो भागों में बँटा नजर आता है। प्राचीन भारतीय साहित्य में गंगा से दक्षिण का क्षेत्र अनार्य भूमि के रूप में उल्लिखत है। गंगा से उत्तर का क्षेत्र आर्यो का प्रमुख क्षेत्र रहा और उस क्षेत्र में मानव सभ्यता की नींव आर्यों के द्वारा ही रखी। कोशी की विभीषिकाओं से विकृत इस ऐतिहासिक भू–भाग में विकसित संस्कृति के अनेक परिदृष्य रेखांकन योग्य है। नाग संस्कृति के विभिन्न आयामों में गीत–गाथाएँ, कथा अनुश्रुति, मूर्ति पूजा पात्र, नाच–गान, थान–गहवर, नागपंचमी, मधु श्रावणी आदि विशिष्ट है।